कृषि विज्ञान केन्द्र, बरेली द्वारा जैविक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली द्वारा दिनाँक 04 सितम्बर, 2020 को विकास खण्ड भुता में "जैविक खेती" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम वर्ल्ड विजन, स्वयं सहायता समूह, बरेली के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में वर्ल्ड विजन, स्वयं सहायता समूह, बरेली के श्री निक्सन ने सभी कृषकों को सामाजिक दूरी बनाकर बैठने और मुँह तथा नाक को मास्क या कपड़े से ढकने की सलाह दी जिसका सभी उपस्थित कृषकों ने पालन किया। उन्होने इस अवसर पर अपनी संस्था द्वारा कराये जा रहे कार्यों तथा कोरोना बीमारी से बचने के ली अपनाई जाने वाली सावधानियों के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। डॉ॰ राज करन सिंह, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र बरेली ने कृषकों को केन्द्र द्वारा कृषकों को प्रदान की जा रही सेवाओं के बारे में तथा कृषि कार्यों को करते समय कोरोना से बचाव के लिये क्या सावधानियाँ रखनी हैं इस सम्बन्ध में जानकारी दी। उन्होने वर्तमान समय में जैविक खेती की आवश्यकता तथा उत्पादों को विक्रय करने के लिये कृषक-उत्पादक संगठन के महत्व पर प्रकाश डालते हुये कृषक-उत्पादक संगठन की आवश्यकता, उसके गठन का तरीका, कार्य करने का तरीका, कृषक-उत्पादक संगठन से कृषकों को होने वाले लाभ तथा इस सम्बन्ध में सरकारी योजनाओं के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। श्री राकेश पाण्डे, विषय वस्तु विशेषज्ञ, फसल विज्ञान ने जैविक खेती के सिद्धान्त, भूमि का चुनाव, पंजीकरण, फसल का चुनाव, प्रजातियों का चुनाव, पोषण प्रदान करने के विभिन्न विधियों, कीट-बीमारी प्रबन्धन के लिये विभिन्न बायोएजेंट, ट्रेप्स आदि के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होने ने यह भी बताया कि जैविक खेती जितने बड़े क्षेत्रफल में समूह के रूप में कि जाये सफलता की सम्भावना उतनी ही

अधिक होती है। इस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना वर्मीकम्पोस्ट का व्यवसाय कर रहे सफल उद्यमी श्री प्रतीक बजाज ने कृषकों को केंचुआ खाद बनाने तथा जैविक खेती में उसके उपयोग के विषय में जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अवसर पर वर्ल्ड विजन, स्वयं सहायता समूह ने सभी कृषकों को एच॰डी॰पी॰ई॰ वर्मीकम्पोस्ट बेड भी वितरित किये। कार्यक्रम में भुता विकासखण्ड के 16 गाँवों के 65 किसानों ने सहभागिता की।